ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' द्वारा रचित 'साथी हैं संवाद मेरे' में अनुभूति पक्ष

डॉ. हरजीत कौर
प्राध्यापिका हिंदी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
ओटू (सिरसा) हरियाणा

श्री ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' जी साहित्यिक नगरी जिला सिरसा (हरियाणा) से सम्बन्ध रखते हैं | इनका 10 जुलाई 1955 को हुआ | शिक्षा जगत से जुड़े होने के साथ –साथ उच्चकोटि के विचारक तथा समीक्षक भी हैं | प्रकृति से इनका गहरा लगाव है | मानवतावादी विचारधारा के पोषक होने के कारण आम आदमी की व्यथा इनके साहित्य के माध्यम से उभरकर सामने आती है | शिक्षा जगत से इनका गहरा संबंध रहा है | जहाँ तक रचना कर्म की बात है, इन्होंने 'अर्चना के उजाले'(काव्य संग्रह, 2017), 'साथी हैं संवाद मेरे'(काव्य संग्रह, 2019), 'रूपदेवगुण की कहानियों में नारी के विभिन्न रूप'(समीक्षात्मक,2017)'राजकुमार 'निजात' शिक्षाप्रद- जीवनोपयोगी सूक्तियाँ'(समीक्षात्मक,2017) 'साथी हैं संवाद मेरे'(काव्य संग्रह, 2019) | इसके साथ-साथ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी रचनाओं से साहित्य जगत में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाते हैं | इनकी साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए अनेक संस्थाओं ने महत्त्वपूर्ण सम्मान प्रदान किए हैं |

आलोच्य कृति 'साथी हैं संवाद मेरे' काव्य संग्रह में पीयूष जी ने प्रकृति और मानवीय संबंधों को लेकर विस्तृत चर्चा की है | इन कविताओं के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि का प्रकृति से कितना गहरा लगाव है। बदलते परिवेश में आज मनुष्य स्वार्थी होता जा रहा है वह प्रकृति से भी विमुख होता जा रहा है। यदि इसी प्रकार मनुष्य का स्वभाव रहा तो एक दिन वह प्रकृति के दिए उपहारों को भूल जाएगा और उसे अनेक कष्ट सहन करने पड़ेंगे |

'पीयूष ' जी द्वारा रचित 'साथी है संवाद मेरे' के माध्यम से लघु कविताओं का सृजन किया गया है | प्रो.रूप देवगुण के शब्दों में "प्रकृति से संबंधित कविताओं में कल्पना की उड़ान परिलक्षित होती है | विचार पक्ष को प्रकट करने के लिए भी कभी कल्पना ओं का अवलंब लेता है। पीयूष जी ने अपनी कविताओं में सुंदर समाज व देश की परिकल्पना की है। विभिन्न प्रकार के अलंकारों को काव्य में लाने के लिए भी भी उसी ने कल्पना से मदद मांगी है |"

सामाजिक रिश्तों और परंपराओं का चित्रण - इन कविताओं में प्रकृति और मनुष्य को जोड़ने के साथ-साथ आने एक सामाजिक रिश्तो और परंपराओं को भी भली-भाँति चित्रित किया गया है। आलोचक काव्य संग्रह संवेदना के जोश पर उभर कर आए हैं उन्हें विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सकता है- इन कविताओं के माध्यम से कवि ने जीवन और जगत से जुड़े विभिन्न विषयों को आधार बनाया है | 'अद्भुत साम्य है', 'आती विरल प्रकाशधारा', 'मित्र पेड़ की याद', 'कुदरत के उपहार', 'जीवन की खैर मनाते' जानता है हरा पेड़', 'चाँदनी रात', 'नदी बहती है अविरल' 'बरसाने को आतुर बादल', 'दानी जलद', 'स्वास्थ्य के मोती' आदि कविताओं के माध्यम से कवि ने प्रकृति की विभिन्न अवस्थाओं का मनोरम चित्रण किया है | प्रकृति मानव की सहचरी है | 'जल जीवन का दान करते' शीर्षक कविता के ये अंश इस तथ्य को सार्थकता प्रदान करते हैं – "बादल प्रेरक हैं/त्याग के / जो भी होता है /उनके पास / पूरा बाँट देते/ बिना अपनी चिंता किए |"

प्रकृति से नाता जोड़ने का आह्वान - वर्तमान पारिवेश में स्वार्थपूर्ति हेतु मनुष्य ने प्रकृति से दूरी बना ली है | इन कविताओं में कवि प्रकृति और मानव के रिश्तों को परिभाषित करते हुए प्रकृति से नाता जोड़ने का आह्वान किया है- "साँझ ढले जब/ सूरज अपने घर / जाने को होता है / पंछी लौट आते हैं / अपने घोंसलों में / बिताने को रात / हम भी होते हैं / अपने परिवार के साथ / अद्भुत साम्य है / प्रकृति और / मानव और सृष्टि में |" वृक्षों को बचाने के प्रति कवि गंभीर है | पेड़ की भावनाओं को कुछ अंदाज़ में अभियक्त किया है – "पेड़ का मन भी / मित्र से मिल कर/ बड़ा हल्का हुआ / पुनः मिलने का उसको निमंत्रण दिया / मित्र ने स्वीकार किया / और शुक्रिया अदा कर / लौट आया फिर / अपने काम पर / बिल्कुल तरोताजा |"

पारिवारिक रिश्तों का चित्रण - कवि पारिवारिक रिश्तों के प्रति काफी संवेदनशील हैं | भारतीय संस्कृति में मानवीय रिश्तों की अनूठी मिसाल देखने को मिलती है | 'माँ शीर्षक कविता के अंश उद्धृत हैं, "माँ त्याग की मूर्ति है / करुण का सागर है / सेवा का / उज्ज्वल भाव है / वह संतान की / ख़ुशी के लिए/ वरदान की मुद्रा में / उठा हुआ / मंगल हाथ है / यह पृथ्वी ही स्वर्ग है / यदि माँ का / प्यार भरा साथ है |" इसी तरह 'पिता' शीर्षक कविता में पिता को मार्गदर्शक जीवनाधार सरल हृदय तथा भगवान से बढ़कर बताया है-"पिता को /जनक भी कहते हैं/ राजा जनक से/ कर्मयोगी /पर, अनासक्त से /दिखते हैं/ गृहस्थी के झमेले से/ तनिक दूर /तटस्थ से रहते हैं |" भाई भुजा - "मानो तो/ सगा भाई /है अपनी/ दायीं भुजा/ नहीं है/ उसके समान/ कोई दूजा|" बहन प्रेम की डोरी तथा बेटी को सृष्टि का आधार बताया है -"बेटी है तो/ सृष्टि है/ निर्मल उज्जवल/ दृष्टि है/ जग में/ खुशियों की/ वृष्टि है/ सृजन की/ दिव्यतम शक्ति है |

गौतम बुद्ध के विचारों के प्रति आस्था - कवि ने 'वेदना शाश्वत है' कविता के माध्यम से गौतम बुद्ध के विचारों से संसार को रूबरू कराया है | गौतम बुद्ध के विचार वर्तमान परिवेश में प्रासंगिक हैं। आज मनुष्य स्वार्थवश मानवता भूलता जा रहा है। धनार्जन ही उसका मात्र उद्देश्य रह गया है | ऐसी अवस्था में गौतम बुध के सिद्धांत ही उसे उचित मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं - "भगवान बुद्ध ने/ चार आर्य सत्य में/ दुख को एक प्रमुख /आर्यसत्य था माना |"

आध्यात्मिकता के स्वर – आध्यात्मिक भावों से जीवन में सकारात्मक विचार उत्तपन होते हैं | 'परमात्मा का प्रकाश' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने आध्यात्मिकता को चित्रित किया है । कवि के अनुसार जीवन में जब परमात्मा का प्रकाश उतरता है तो संपूर्ण जीवन फूल की भाँति खिल उठता है, जो कि सारे संसार को महका देता है - "जिंदगी में जब/ परमात्मा का प्रकाश/ उतरता है/ सब आलोकित/ होने लगता है/ रोम-रोम पुलकता है/ अंग-अंग महकता है/ वाणी से/ गुणगान/ उसी का होता है/ अंदर भी/ जाप उसी का/ चलता है/ जैसे फूल/ जब खिलता है/ स्वतः महकता है/ परिवेश को/ सुगंधमय कर देता है |"

संस्कृति और संस्कार - 'फर्क क्या पड़ता है' कविता के माध्यम से कवि ने ब्रह्म सम्बन्धी अवधारणा को स्पष्ट किया है | भारत में विभिन्न धर्मों सम्प्रदायों के लोग रहते हैं |लोग अपने आराध्य को अलग-अलग नामों से याद करते हैं लेकिन सबका सार एक ही है, "सवाल आस्था का है/ आत्म निष्ठा का है/ संस्कृति और संस्कारों का है /वह कहता है 'अनलहक' तुम 'अहम् ब्रह्मास्मि'/ फर्क क्या पड़ता है/ सिर्फ भाषा का अंतर है/ बाहर से है भेद/ अंदर से सब एक |"

किसान के त्याग का चित्रण - 'किसान धरती का देवता' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने किसान की मेहनत, उसके त्याग तथा उसकी जीवन शैली को चित्रित किया है। यद्यपि किसान दिन-रात मेहनत करता है और पूरे राष्ट्र को अन्न उपलब्ध करवाता है, लेकिन उसे स्वयं कर्ज के बोझ तले रहते हुए जीवन जीवन यापन करना पड़ता है | वह समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को कभी नहीं भूलता और संसार भर के लिए वह सदैव विषम परिस्थितियों में संघर्षरत रहता है – "फिर भी/ उस तपस्वी को अधभूखा रहना पड़ता/ कर्ज का बोझ/ भारी है/ परिवार की/ जिम्मेदारी है/ नहीं कभी घबराता /फर्ज सदैव निभाता/ पशु-पक्षी, कीट-पतंगे/ खेतों पर उसके पलते/ मन करता नहीं मैला /पोषण सबका करता /किसान है धरती का देवता |"

मजदूर की व्यथा का चित्रण- कवि ने निकल चुकी हवा प्रजातंत्र की शीर्षक कविता के माध्यम से मजदूर की व्यथा को चित्रित किया है। दिखते कंकाल से कविता के माध्यम से मजदूर के जोखिम भरे जीवन की ओर संकेत किया है- "तुम्हारे बच्चों को/आवास नहीं/ खाने को आहार नहीं/ कंकाल जैसे दिखते वे/ आयु पूरी कर रहे/ तुम्हारी सुरक्षा के इंतजाम नहीं/ मालिक देते ध्यान नहीं |"

कर्म के महत्त्व पर बल - कवि का 'मनसा वाचा कर्मणा' में गहरा विश्वास है। व्यक्ति कर्म से ही महान बनता है यदि मनुष्य सही लक्ष्य पर आगे बढ़ता है, तो उसे अवश्य ही मंजिल मिल जाती है | रास्ते में आने वाले काँटे फूल बन जाते हैं और वह एक दिन अवश्य विजय पताका फहराता है| 'फहराता विजय पताका' कविता के माध्यम से कवि की भावनाओं को अनुभूत किया जा सकता है -"जब कोई चल पड़ता है/ लक्ष्य लेकर जुनून के साथ/ बढ़ता रहता है पथ पर निरंतर/ देखता नहीं पथ है पथरीला/ या चमकीला / कांटों वाला या फूलों जैसी/ सुगंध वाला अपने पाँव के छालों पर भी/ जाता नहीं उसका ध्यान/ नहीं महसूस होती उसे थकान/ रहती है सिर्फ एक ही धुन/ अग्रसर रहने की /प्रगति उसका धर्म/ कर्म ही जीवन-मर्म/ मिल जाती सफलता/ वह फहराता विजय-पताका |"

सकारात्मक सोच की ओर संकेत - कवि ने जीवन में सदैव सकारात्मक सोच अपनाने पर बल दिया है | यदि मनुष्य सकारात्मक सोच के आधार पर आगे बढ़े तो निश्चय ही वह मंजिल को प्राप्त कर सकता है - 'पंख तो निमित्त मात्र हैं' शीर्षक

कविता के माध्यम से मिलते हैं - "साइबेरियन पक्षी हो/ या कोई अन्य साधारण से/ नन्हे परिंदे/ वे अपने पंखों से/ नहीं भरते उड़ान/ पंख तो होते हैं निमित्त मात्र/ वे भरते हैं/ अपने बुलंद हौसलों से उड़ान |"

अनेकता में एकता का संदेश - भारत की मिट्टी कविता के माध्यम से कवि ने यह चित्रित किया है इस देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, अनेक धर्म और संप्रदाय हैं लेकिन इस देश में सभी महापुरुषों का और पवित्र ग्रंथों का समान भाव से आदर होता है | यहाँ तक कि इस देश में नदियों को भी पवित्र माना जाता है | यहाँ के पूजा स्थलों का आदर सत्कार होता है | देश की मिट्टी में भगवान बसा हुआ है - "मंदिर, मस्जिद,चर्च, शिवालय/ सबका है सत्कार यहाँ/ इस मिट्टी के कण कण में/ बसते हैं भगवान यहाँ/ भारत की मिट्टी को देखो/ अद्भुत और महान यहाँ |" भारतीय सैनिक भी हमारे लिए गौरव और गर्व के प्रतीक हैं | 'शहीदों को नमन' शीर्षक कविता के माध्यम से शहीदों के सम्मान में उदगार – "था उनका/व्यक्तित्व विराट/ हिमालय सा उज्ज्वल/ गंगा सा पावन/ पहाड़ सा फौलादी/ पेड़ सा फलदायी/जगे मन में /गर्व के भाव /खिले श्रद्धा के फूल/जले आशा के दीप /अगणित/नमन-शत-शत उन्हें |"

शिल्प विधान - छंद मुक्त रचना के माध्यम से कवि ने भावों को सुंदर अभिव्यक्ति प्रदान की है । अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश जैसे अलंकार प्रयोग करके कविता की सार्थकता को बढ़ाया है | कहीं-कहीं मुहावरों के प्रयोग द्वारा भाषा में चार चांद लगा दिए हैं भाषा सरल है और वर्णनात्मक शैली भी प्रयोग हुई है |

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि ने आलोच्य काव्य संग्रह के माध्यम से समाज के वर्तमान परिवेश को चित्रित करते हुए अनेक आयाम प्रस्तुत किए हैं । प्रकृति के प्रति लगाव, पारिवारिक संबंध, किसान की दुर्दशा, एकता में अनेकता जैसे भावों को चित्रित करके रचना को सार्थकता प्रदान की है |

सन्दर्भ सूची

(1) ज्ञानप्रकाश 'पीयूष', साथी हैं संवाद मेरे, बोधि प्रकाशन,जयपुर |

(2) रामधारी सिंह 'दिनकर', संस्कृति के चार अध्याय, राजपाल एंड संस, दिल्ली |

(3) धर्मवीर भारती, मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी |

(4)शशि सहगल, नयी कविता में मूल्य-बोध,अभिनव प्रकाशन, दिल्ली |

शोध सार

श्री ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' जी साहित्यिक नगरी जिला सिरसा (हरियाणा) से सम्बन्ध रखते हैं | इनका 10 जुलाई 1955 को हुआ | शिक्षा जगत से जुड़े होने के साथ –साथ उच्चकोटि के विचारक तथा समीक्षक भी हैं | प्रकृति से इनका गहरा लगाव है | मानवतावादी विचारधारा के पोषक होने के कारण आम आदमी की व्यथा इनके साहित्य के माध्यम से उभरकर सामने आती है | शिक्षा जगत से इनका गहरा संबंध रहा है | आलोच्य कृति 'साथी हैं संवाद मेरे' काव्य संग्रह में पीयूष जी ने प्रकृति और मानवीय संबंधों को लेकर विस्तृत चर्चा की है | इन कविताओं के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि का प्रकृति से कितना गहरा लगाव है। कवि पारिवारिक रिश्तों के प्रति काफी संवेदनशील हैं | कवि ने जीवन में सदैव सकारात्मक सोच अपनाने पर बल दिया है | यदि मनुष्य सकारात्मक सोच के आधार पर आगे बढ़े तो निश्चय ही वह मंजिल को प्राप्त कर सकता है | समाज के वर्तमान परिवेश को चित्रित करते हुए अनेक आयाम प्रस्तुत किए हैं। प्रकृति के प्रति लगाव, पारिवारिक संबंध, किसान की दुर्दशा, एकता में अनेकता जैसे भावों को चित्रित करके रचना को सार्थकता प्रदान की है |